करते हैं। सामान्य निधि का निर्माण समूह के सदस्यों को ऋण प्रदान करने के लिए किया जाता है और यह ऋण समूह के सदस्यों के निर्णय के अनुसार ही दिया जाता है। SHG के सदस्य स्व-सहायता, एकजुटता और पारस्परिक हित के सिद्धांतों पर कार्य करते हैं।

SHGs गतिविधियों में निम्नलिखित कारकों के कारण ग्रामीण निर्धनों की विकास संबंधी चुनौतियों पर पर्याप्त प्रभाव डालने की क्षमता है:

- **साख/ऋण तक पहुंच:** SHG विभिन्न प्रयोजनों हेतु समय पर ऋण प्राप्त कर सकते हैं जो सदस्यों के लिए स्व-रोजगार के अवसरों का सृजन करने में सहायता करता है, जैसे - बंधक भूमि को मुक्त कराने, कार्यशील पूंजीगत आवश्यकताओं की पूर्ति और आवासीय सामग्री हेतु, तथा सिलाई मशीनों, हथकरघा, मवेशी इत्यादि जैसी संपत्ति क्रय करने हेतु।
    - चूंकि SHGs में किसी एक सदस्य द्वारा ऋण अदा न करने के किसी भी मामले को अन्य सदस्यों द्वारा गंभीरता से लिया जाता है, अत: बैंक इन्हें किसी संपार्श्विक (ऋण के बदले बैंक के पास बंधक रखी गयी संपत्ति: collateral) के बिना भी ऋण प्रदान करने हेतु तैयार रहते हैं। उदाहरण के लिए, हाल ही में, सरकार ने महिला स्वयं सहायता समूहों के लिए संपार्श्विक मुक्त ऋण को दोगुना करते हुए 10 लाख रु से बढ़ाकर 20 लाख रु करने की घोषणा की है।
- **ग्रामीण उद्यमिता:** SHGs ने अपने सदस्यों को गैर-कृषि क्षेत्रक से आय सृजन करने वाली गतिविधियों में संलग्न किया है, जैसे परिधान और तैयार कपड़े, चमड़े के उत्पाद, मिट्टी के बर्तन, खिलौने, घरेलू उपभोग के सामान, वन आधारित उत्पाद जैसे गन्ना उत्पाद, शहद, बांस के उत्पाद, डंडे वाली झाड़ू, भोजन के लिए पत्तों से कप-प्लेट बनाना (Adda Leaf plates), ताड़ का पत्ता आदि।
- **निर्धनता उन्मूलन:** SHGs निर्धनता-उन्मूलन योजनाओं में सहायक सिद्ध हो सकते हैं क्योंकि वे अपने सदस्यों को सशक्त बनाने हेतु प्रयासरत रहते हैं। उदाहरण के लिए, स्वर्ण जयंती ग्राम स्वरोजगार योजना ग्रामीण निर्धनों को SHGs में संगठित करके कार्यान्वित की जा रही है तथा यह उन्हें कौशल विकास प्रशिक्षण, वित्तीय संस्थानों के साथ साख सहलग्नता प्राप्त करने में सहायता तथा उनके द्वारा उत्पादित उत्पादों हेतु अवसंरचना और विपणन सहायता उपलब्ध कराती है।
- **ग्रामीण महिलाओं का सशक्तीकरण**: महिला स्वयं सहायता समूह महिलाओं को उद्यमी बनने, जोखिम उठाने, वित्तीय स्वतंत्रता अर्जित करने और उनके घरों एवं गांवों में लिए जाने वाले निर्णयों में अधिक से अधिक भागीदारी सुनिश्चित करने में सक्षम बनाते हैं। उदाहरण के लिए - कुदुम्बश्री केरल में, चेतना रानी महिला SHG राजस्थान में, SEWA आदि स्वयं सहायता समूह।
- **सतत विकास:** SHGs पारंपरिक संसाधनों और प्रणालियों के संरक्षण के लिए भी उपयोगी सिद्ध हो सकते हैं। उदाहरण के लिए, मावकिरनॉट (Mawkyrnot) SHG को मेघालय के मावकिरनॉट में 52 फुट लंबे जीवित वृक्षों के जड़ के सेतु (living roots bridge) के संधारणीय उपयोग के लिए वर्ष 2016 के भारत जैव विविधता पुरस्कार से सम्मानित किया गया था।

इस प्रकार, SHG ग्रामीण भारतीय अर्थव्यवस्था को सहयोग हेतु अनेक अवसर प्रदान करते हैं। हालांकि, उन्हें अधिक प्रभावी बनाने और उनकी क्षमता का पूर्ण उपयोग करने हेतु कुछ कदम उठाये जाने की आवश्यकता है, जैसे कि SHG का तीव्रता से डिजिटलीकरण किया जाना; SHG को विपणन सहलग्नता प्रदान करना; सरकार द्वारा सुविधाकर्ता और प्रवर्तक की भूमिका का निर्वहन करना; इन समूहों के लिए नए वित्तीय उत्पादों को तैयार करने और निरंतर नवाचार हेतु बैंकों द्वारा आवश्यकता आधारित दृष्टिकोण अपनाए जाने की आवश्यकता है।

8. Highlight the potential and challenges associated with digital healthcare in India.
भारत में डिजिटल स्वास्थ्य देखभाल की क्षमता और संबद्ध चुनौतियों पर प्रकाश डालिए।

दृष्टिकोण:

- डिजिटल स्वास्थ्य देखभाल की अवधारणा पर संक्षिप्त चर्चा कीजिए।
- डिजिटल स्वास्थ्य देखभाल की क्षमता और इसकी चुनौतियों पर चर्चा कीजिए।
- उपर्युक्त बिंदुओं के आधार पर निष्कर्ष प्रस्तुत कीजिए।